THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

॥ श्री ॥

जैनयात्रादर्पण

इस पुस्तकमें दिगंबर मतवालोंकी
सर्व यात्रा लिखी है.

यह यात्राकी छोटी पुस्तक दुलीचंद पाक्षिक
श्रावक सवाई जयपुरवालेने छपवाई है.

बंबईमें,

यह पुस्तक "निर्णयसागर" छापखानेमें छपा है.

शाके १८१

इस पुस्तकऊपर रजिष्टरी कराई है इस्तें कि हमारी मरजीबिना
कोइ न छापे अगर कोई छपाि तो सरकार अंगरेज
बहादुरके कानून माफि फल पावेगा.

रू. श्री मोतीलाल
घ. मू. माला.

॥ श्री ॥

॥ जैनयात्रादर्पण प्रथम भाग ॥

॥ इस पुस्तकमें दो भाग हैं ॥ प्रथमके भागमें सम्मेदशिखर आदिके तरफकी सर्व यात्रा हैं ॥ और बुंदेलखंडके तरफकी सर्व यात्रा हैं ॥ दूसरे भागमें बाहुबली जैनबदरी मोडबदरी आदिके तरफकी सर्व यात्रा हैं ॥ तथा गिरनार मांगीतुंगी मुक्तागिरि आदिके तरफकी सर्व यात्रा हैं ॥ इनके जानेके ठिकाने खुलासा लिखे हैं ॥ इसको अवलसे आखिरतक सबको बांचके विचार करके फिर यात्रा करनेको जावे ॥ ॥ ॥

इस दोनों भागकी यात्रा सिवाय जो बाकी रही यात्रा सिद्ध क्षेत्रोंकी वा भगवानके जन्मनगरीकी यात्रा सो इस पुस्तकके दूसरे भागके पिछाडीके अंतके पत्रमें लिखी हैं सो इनके ठिकाने मालुम नहीं हैं सो इसीको बांचके सबको सुनावे जो किसीको इनके ठिकाने मालुम होय तो सर्व देशमें लिख भेजें ॥ ॥ ॥

अथ जैनधर्म्मियोंकी तीर्थयात्रा वर्णन करते हैं ॥ पंजाब देशमें अंबालेकी छावनीसे लेकर कलकत्ते हाथेके देशके तीर्थोंकी ॥ तथा बुंदेल खंडके देशके तीर्थोंकी यात्रा क्रमसे ॥ प्रथम सिद्ध क्षेत्रोंके नाम ॥ फिर इन क्षेत्रोंमें मुक्त भए मुनिजनोंकी संख्या ॥ फिर भगवानके जन्मनगरीके नामोंकी संख्या ॥ फिर अतिशय क्षेत्रोंके नामोंकी संख्या ॥ और इनके मार्गमें जो जो मंदिर तथा जो जो चैत्यालय आवेंगे उनकी संख्या जिस नगरमें सालकी साल मेला लगके बडा उच्छव होता है उसकी मीती लिखेंगे ॥ और जिस नगरमें वा जिस ग्रामँमें श्रावकोंके जितनी जातके घर आवेंगे उनकी अंदाज संख्या ॥ और रस्तेमें बडे छोटे नगर आवेंगे उनके नाम ॥ जहां रेल बदलेगी उस नगरका वा ग्रामँका नाम ॥ और जिस नगरका वा ग्रामँका टिकट लेवेंगे उसका नाम ॥ रस्तेमें जो वस्तु खानेकी आदि चाहिए सो जिस नगरमें जैनी श्रावक होवे उनकी मारफत लेवे तो सोधकी अच्छी मिलेगी ॥ और गाडी घोडा आदि भाडे करना होवे तो इनकी मारफत करे तो फायदा रहेगा ॥ और सर्व बातकी जुम्मेदारी इनकी रहेगी ॥ और जिस नगरमें बडी प्रतिमा होवेगी उसकी ऊंचाइ चौडाइकी जहांकी प्रमाणकी सं-

ख्या लिखेंगे सो दुलीचंदके हाथकी जाननी ॥ इस यात्राके रस्तेमें जाडेके दिनोंमें ठंड जादा पडती है सो रूईके वस्त्र जो चाहिएँ सो साथ लेवे ॥ ॥ अब सिद्ध क्षेत्रोंके नाम लिखते हैं ॥ सोनागिरि १ दोनागिरि २ नैनागिरि ३ पटना ४ पावापुरी ५ गुणावा ६ राजग्रही ७ चंपापुरी ८ सम्मेद शिखर ९ ये नौ सिद्ध क्षेत्र हैं ॥ ॥ अब भगवानकी जन्मनगरीके नाम लिखते हैं ॥ हस्तिनापुर १ सौरिपुर २ कौसांवी ३ बनारस ४ सिंहपुरी ५ चंद्रपुरी ६ कुंडलपुरी ७ चंपापुरी ८ अयोध्या ९ सावीस्तीपुरी १० नौराई ११ कंपिला १२ ॥ ॥ अब अतिशय क्षेत्रोंके नाम लिखते हैं ॥ मथुरा १ पिरोजाबाद २ ग्वालियरके किल्लेमें मंदिर प्राचीन हैं ३ चंदेरीकेपास थोवनजी ४ टीकमगढके नजीक पपोराजी ५ छतरपुरकेपास खजराय ६ दमोसे आगे कुंडलपुर ७ ॥ अतिशय क्षेत्र उसको कहते हैं जहां हमेंसा बारों महीने जात्रीलोग आते जाते रहैं ॥ ये सर्व यात्राके नाम ऊपर लिखे तिनके जानेका रस्ता लिखते हैं ॥ ॥

अंबालेकी छावनी सदर बजारमें मंदिर दो हैं अगरवाले श्रावकोंके सौ घर हैं ॥ इहांसे आठ दिनका खानेका सामान वा पूजनकी सामग्री लेवे ॥ १ ॥

इहांसे टिकट सहारनपुरका लेवे ॥ रेलसे एक मील गुलालबाड अगरवाले श्रावकोंका है वहां ठहरे ॥ मंदिर प्यारा हैं ॥ अगरवाले श्रावकोंके चारसौसे अधिक घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके तीन घर हैं ॥ पल्लीवाल श्रावकोंका एक घर है ॥ २ ॥ सहारनपुरसे टिकट मेरठका लेवे ॥ इहां धर्मशाला नहीं है सो तलास करके ठहरे ॥ इहां मंदिर एक है ॥ छावनी सदर बजारमें मंदिर दो हैं ॥ तोपखानेके बजारमें मंदिर एक है ॥ असे मंदिर चार हैं ॥ मेरठमें छावनी सदर बजारमें तोपखानेके बजारमें इन सर्व ठौर अगरवाले श्रावकोंके दोसौ घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके पाँच घर हैं ॥ ३ ॥ इहांसे हस्तिनापुरकी यात्रा बीस मील है ॥ गाडीभाडे करके जावे ॥ इस हस्तनापुरमें तीन तीर्थंकरोंका जन्म हुवा है ॥ शांतिनाथ स्वामीका ॥ कुंथनाथ स्वामीका ॥ अरहनाथ स्वामीका ॥ इहां एक मंदिर दिगंबरोंका बडा है ॥ इस हस्तनापुरसे डेढ मील बहांबा गांव है वहां एक मंदिर है ॥ अगरवाले श्रावकोंके घर हैं ॥ जो कोई जैनीभाइयोंको कोई वस्तु चाहिये सो इहांसे ले आवे ॥ इहांसे मेरठ आवे ॥ ४ ॥ मेरठसे टिकट दिल्लीका लेवे ॥ रेलसे दो मील जयसिंहपुरा है वहां

खंडेलवाल तथा अगरवाले श्रावकोंकी धर्मशाला है इनमें ठहरे इहां आरामकी जगे है ॥ इहां मंदिर दो हैं ॥ दिल्ली सहरमें पहाडीमें जयसिंहपुरेमें इन आदि सर्व ठिकाने मंदिर बारा हैं ॥ चैत्यालय ग्यारा हैं ॥ अगरवाले श्रावकोंके अंदाज तेरासौ घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके सत्तर घर हैं ॥ मारवाडी अगरवाले श्रावकोंके दश घर हैं ॥ दिल्ली सहर बहुत बडा है एक लाख के हजार घर हैं ॥ ५ ॥ दिल्लीसे टिकट हाथरस मथुराका लेवे ॥ बीचमें मेंडूके इष्टेसन ऊपर रेल बदलती है सो इस रेलसे उतरके मथुरा जानेवाली रेलमें बैठे मेंडूसे हाथरस छ मील है ॥ एक इष्टेसन है ॥ रेलसे पाव मील श्रावकोंका बडा मंदिर है उसके बराबर धर्मशाला है उनमें ठहरे ॥ इहां मंदिर दो है इनमें एक मंदिर बहुत बडा है देखनेलायक है ॥ मारुवाडी अगरवाले श्रावकोंके साठ घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके चालीस घर हैं ॥ जेसवाल श्रावकोंके आठ घर हैं ॥ ६ ॥ हाथरससे टिकट मथुराका लेवे ॥ रेलसे घियामंडी डेढ मील है वहां दिगंबरके मंदिरमें जाके तलास करके ठहरे ॥ मथुरा सहरमें मंदिर दो हैं ॥ चैत्यालय तीन हैं ॥ चौरासीमें मंदिर एक बहुत बडा है ॥ जमुनानदीके पहिले पार हंसगंज-

में मंदिर एक है ॥ जयसिंहपुरेमें मंदिर एक है ॥ सर्वें मंदिर पाँच हैं ॥ चैत्यालय तीन हैं ॥ आगे चैत्यालय सात थे ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके सवासौ घरथे ॥ अब मौजूद साठ घर हैं ॥ अगरवाले श्रावकोंके पाँच घर हैं ॥ ७ ॥ मथुरासे टिकट आगरेका लेवे ॥ चालीस मील है रेलसे एक मील बेलनगंज है ॥ वहां दिगंबर मंदिर एक जमुना नदीके किनारे सडकके बराबर है ॥ इहां धर्मशाला है इनमें ठहरे ॥ मंदिर तेरा हैं ॥ चैत्यालय नौ हैं ॥ सहरमें ॥ बेलनगंजमें ॥ छीपीटोलेमें ॥ नाइकी मंडीमें ॥ राजाकी मंडीमें ॥ शिकंदरेमें ॥ नुनीहाईमें ॥ ताजगंजमें ॥ इन सर्व ठिकाने दर्शन करे ॥ अगरवाले श्रावकोंके तीनसौ घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके पौनेदोसौ घर हैं ॥ जेसवाल श्रावकोंके तीनसौ घर हैं ॥ पल्लीवाल श्रावकोंके पिच्छत्तर घर हैं ॥ लवेचूं श्रावकोंके घर है ॥ आगरा सहर बहुत बडा है ॥ ८ ॥ आगरेसे टिकट पिरोजा बादका लेवे पच्चीस मील हैं ॥ बीचमें रेल टोंडलेमें बदलती है सो इस रेलसे उतरके पिरोजाबाद जानेवाली रेलमें बैठे ॥ रेलसे एक मील चंद्रप्रभु स्वामीका मंदिर है वहां धर्मशालामें ठहरे ॥ मंदिर पाँच हैं ॥ चैत्यालय तीन हैं ॥ इहां हीराकी प्रतिमा तथा

स्फटिककी प्रतिमा हैं ॥ इहां हमेसा सालकी साल चैतमें मेला होता है मीतीका ठहिराव नहीं है बहुतसे आदमी इकट्ठे होते हैं अगरवाले श्रावकोंके अंदाज सवासौ घर हैं ॥ पद्मावती पुरवार श्रावकोंके पचास घर हैं ॥ पल्लीवाल श्रावकोंके सत्रा घर हैं ॥ लोइया श्रावकोंके सात घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके पाँच घर हैं ॥ लवेचू श्रावकोंके आठ घर है ॥ खरौवा श्रावकोंके सात घर हैं ॥ ए ॥ इहांसे गाडी भाडे करे ॥ तीन दिनका खानेका सामान लेवे ॥ पूजनकी सामग्री लेवे ॥ फिरोजाबादसे आठाईस मील बटेश्वर है ॥ इसीको सौरिपुर कहते हैं ॥ ये नेमनाथ स्वामीकी जन्मनगरी है ॥ इहां जमुना नदीके किनारे एक मंदिर दिगंबरका बहुत बडा है ॥ वैष्णवके मंदिरोंके बीचमें है इहांकी यात्रा जरूर करे ॥ इहांसे फिरोजाबाद आवे ॥ १० ॥ फिरोजाबादसे टिकट रातके सातबजे इलाहाबादका लेवे सूरज उगते उतरै ॥ रेलसे एक मील चौक है इसके नजीक पानके दरीबेमें अगरवाले श्रावकोंकी धर्मशालामें ठहरै ॥ मंदिर तीन हैं ॥ चैत्यालय सात हैं ॥ अगरवाले श्रावकोंके नब्बे घर हैं ॥ जेसवाल श्रावकोंके पाँच घर हैं ॥ लवेचू श्रावकोंके दो घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके दो घर हैं ॥ पल्लीवाल श्रावकोंके दो घर

हैं ॥ यह सहर बहुत बडा है ॥ ११ ॥ इलाहाबादसे कौसांबीकी यात्रा बत्तीस मील है ॥ गाडीभाडे करे ॥ छ दिनका खानेका सामान लेवे ॥ पूजनकी सामग्री लेवे ॥ कौसांबीमें पद्मप्रभु स्वामीके चार कल्याणक हुये हैं ॥ मंदिर एक है ॥ इहां कोई देव है उसीको जिनेंद्रकी भक्ति है सो केशरकी वर्षा करे है ॥ कौसांबीसे इलाहाबाद आवे ॥ १२ ॥ इलाहाबादसे सामके पाँचबजे टिकट पटनेका लेवे सूरज उगते पहले उतरे ॥ रेलसे दो मील सुदर्शन सेठके बगीचेके सामने ॥ नेमनाथस्वामीके मंदिरके पास थोडे आदमी ठहरनेकी जगे है ॥ इस पटनेमें सुदर्शन सेठ मोक्ष भये हैं ॥ मंदिर पाँच हैं ॥ चैत्यालय एक है ॥ जेसवाल श्रावकोंके दश घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके पाँच घर हैं ॥ अगरवाले श्रावकोंका एक घर है यह सहर बहुत बडा है ॥ १३ ॥ पटनेसे टिकट बख्तावरपुरका लेवे दो इष्टेसन हैं ॥ इहांसे गाडी भाडे ठेकेमें करे रोजिनदारीमें नहीं करे ॥ पावापुरी ॥ राजग्रही ॥ गुणावा ॥ कुंडलपुर आदिकी यात्राके वास्ते भाडे करे ॥ १४ ॥ बख्तावरपुरसे बिहार अठारा मील है ॥ मंदिर दो हैं ॥ श्रावकोंके तीन घर हैं ॥ इहांसे पूजनकी सामग्री जादा लेवे ॥ खानेका सामान दश दिनका लेवे ॥ १५ ॥ बिहारसे पावापुरी

बारा मील है इहां महावीर स्वामी मोक्ष भये हैं ॥ पा-
वापुरीसे नवादा दश मील है इसका दूसरा नाम गु-
णावा है ॥ इहांसे गौतमस्वामी मोक्ष भए हैं ॥ इहांसे
बारा मील राजग्रही है इहां पंच पहाडी ऊपरसे जंबू
स्वामी आदि मुनि मुक्ति भए हैं जंबूस्वामीके चरित्रमें
लिखा है ॥ इहांसे कुंडलपुरी आठ मील है महावीर
स्वामीकी जन्मनगरी है ॥ इहांसे बिहार छ मील है ॥
इहांसे बख्यावरपुर आवे ॥ १६ ॥ बख्यावरपुरसे
टिकट भागलपुरका लेवे बीचमें मुकायेके इष्टेसन ऊ-
पर इस रेलसे उतरके भागलपुर जानेवाली रे-
लमें बैठे ॥ रेलसे दो मील नाथनगर है वहांसे न-
जीक वासपूज स्वामीके दो मंदिर हैं ॥ वहां धर्म-
शालामें ठहरे ॥ इस चंपापुरीमें वासपूजस्वामीके पं-
चकल्याणक हुये हैं ॥ इस नाथनगरमें अगरवाले श्रा-
वकोंके पाँच घर हैं ॥ इहांसे एक मील चंपानाला है
वहां स्वेतांबरके दो मंदिर हैं इनमें एक मंदिरके ऊपर-
की बाजूमें दिगंबर एक मंदिर है ॥ रेलके पास सूजा-
गंजमें बजारके नजीक दिगंबर मंदिर एक है ॥ अगर-
वाले मारवाडी श्रावकोंके बीस घर हैं खंडेलवाल
श्रावकोंके दो घर हैं ॥ १७ ॥ भागलपुरसे रातके आ-
ठ बजे टिकट गिरेटीका लेवे ॥ बीचमें दो ठिकाने रेल

बदलती है ॥ लक्खीसरायमें ॥ मधुपुरमें ॥ गिरेटीमें मंदिर एक है ॥ धर्मशाला है खंडेलवाल श्रावकोंके घर हैं ॥ गिरेटीसे सोला मील मधुवन है ॥ वहां दिगंबरकी स्वेतांबरकी धर्मशाला है उनमें ठहरे ॥ इहांसे सूरज उगते स्नान करके पूजनकी सामग्री लेके चले सो सम्मेदशिखरके पर्वत ऊपरसे बीस तीर्थंकर आदि असंख्यात मुनि मुक्त भये हैं ॥ इन सबकी पूजा करके मधुवनमें आवे ॥ इहांके मंदिरोंमें पूजा करे ॥ इहांसे गिरेटी आवे ॥ १८ ॥ गिरेटीसे टीकट आरेका लेवे ॥ उतरनेका ठिकाना अगरवाले श्रावक टुकटुक कुंवरके बगीचेमें तथा सुखानंदके बगीचेमें ठहरे ॥ मंदिर शिखरबंध पंदरा हैं ॥ चैत्यालय बारा हैं ॥ अगरवाले श्रावकोंके पिछत्तर घर हैं ॥ १९ ॥ आरेसे टिकट बनारसका लेवे बीचमें रेल मुगलकीसरायमें बदलती है सो इस रेलसे उतरके बनारस जानेवाली रेलमें बैठे ॥ रेलसे भेलीपुरा तीन मील है ॥ वहां दिगंबर मंदिर दो हैं वहां धर्मशाला दो हैं उनमें ठहरे ॥ बनारसमें मंदिर पाँच हैं ॥ चैत्यालय पाँच हैं ॥ इस बनारसमें सुपार्श्वनाथ स्वामीका तथा पार्श्वनाथ स्वामीका जन्म हुवा है ॥ इस नगरीमें काशीनाथ छन्नूबाबु जौहरीओसवाल दिगंबरके चैत्यालयमें हीराकी प्रतिमा पार्श्वना-

थ स्वामीकी है ॥ ओसवाल दिगंबरका एक घर है ॥ अगरवाले श्रावकोंके पंद्रा घर हैं ॥ लवेचू श्रावकोंके चार घर हैं ॥ जेसवाल श्रावकोंके पाँच घर हैं ॥ मारवाडी अगरवाले श्रावकोंके चार घर हैं ॥ भेलीपुरामें जेसवाल श्रावकोंके दो घर हैं ॥ भेलीपुरासे पाव मील खजवायपुरा है वहां चैत्यालय एक है ॥ जेसवाल श्रावकोंके आठ घर हैं ॥ २० ॥ वनारससे पूजनकी सामग्री लेवे ॥ खानेका सामान दो दिनका लेवे ॥ वनारससे पाँच मील सिंहपुरी है ॥ वहां दिगंबरकी वडी धर्मशाला है उसमें ठहरे ॥ मंदिर एक वडा है ॥ इस नगरीमें श्रेयांसनाथ स्वामीके चारकल्याणक हुये हैं ॥ इहांसे सात मील चंद्रपुरी है ॥ मंदिर एक है ॥ इहां चंद्रप्रभु स्वामीके चारकल्याणक हुये हैं ॥ इहांसे वनारस आवे ॥ २१ ॥ बनारससे टिकट अयोध्याका लेवे ॥ रेलसे दो मील दिगंबरकी धर्मशाला है वहां ठहरे ॥ मंदिर एक दिगंबरका है ॥ इस अयोध्यामें पाँच तीर्थंकरोंका जन्म हुवा है ॥ ऋषभ देवका १ अजितनाथका २ चौथे अभिनंदनका ३ पाँचवे सुमतनाथका ४ चौदवें अनंतनाथका ५ अयोध्यासे आठ मील साविस्ती नगरी तीसरे संभवनाथ स्वामीकी जन्म नगरी है ॥ इस देशमें इस कालमें इस नगरीका नाम मेंढ-

गांव कहते हैं ॥ एक मंदिर है ॥ इहां उजाड है कि-
सीका घर नहीं है ॥ अयोध्यासे तलास करके यात्रा
करनेको जावे ॥ २२ ॥ अयोध्यासे टिकट नौराहीका
लेवे दश मील है अथवा गाडीभाडे करके जावे ॥ यह
पंदरवे धर्मनाथ स्वामीकी जन्मनगरी है ॥ इहां इनके
चार कल्याणक हुवे हैं ॥ इहां नसीया है मंदिर तथा
श्रावकोंका घर नहीं है ॥ २३ ॥ नौराहीसे टिकट ल-
खनौका लेवे रेलसे अढाई मील गोलदरवाजेके पास
चूडीवाली गलीमें इहले कुवेके नजीक ऋखबदास हर-
खचंद ओसवाल जौहरी दिगंबरकी कोठीमें दूसरा बडा
मकान और है उनमें ठहरे ॥ इनका खास घरु मंदिर
इनके मकानके बराबर है देखने लायक है इहांका सा-
रा वर्णन दूसरी बडी पुस्तकमें विस्तारसे लिखा है ॥
इस लखनौमें मंदिर तीन हैं चैत्यालय एक है ओस-
वाल दिगंबर श्रावकोंका एक घर है ॥ धनवान लाय-
क है अगरवाले श्रावकोंके सौ घर हैं ॥ खंडे-
लवाल श्रावकोंके सत्रा घर हैं आगे संवत उन्नि-
स्से चौदाके सालमें गदरमें छ मंदिर ॥ दो चै-
त्यालय खुद गये ॥ बहुतसे श्रावकोंके घरथे सो स-
ब चले गये ॥ आगे ये सहर बहुत बडाथा एकसौ बारा
मीलके गिरदेमेंथा सो अंगरेजोंने खोदके मैदान कर

दिया इहा बहुतसी वस्तु देखनेकी हाल मोजूद है ॥
॥ २४ ॥ लखनौसे टिकट कानपुरका लेवे ॥ रेलसे दो मील पुराना जंडेलगंज नई सडकके वरावर है ॥ इहां जैनीके दो मंदिर हैं वहाँ जाके तलास करके जहाँ ठहरनेकी जगे होय तहां ठहरे ॥ दिगंबर मंदिर दो हैं ॥ चैत्यालय एक चौकमें है ॥ ओसवाल दिगंबर श्रावकोंके दो घर हैं ॥ अगरवाले श्रावकोंके पचास घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके दश घर हैं ॥ मारवाडी अगरवाले श्रावकोंके बीस घर हैं ॥ लोइया अगरवाले श्रावकोंके बीस घर हैं ॥ लवेचू श्रावकोंके पाँच घर हैं ॥ पल्लीवाल श्रावकोंके दो घर हैं ॥ बुढेले श्रावकोंका एक घर है ॥ जेसवाल श्रावकोंका एक घर है ॥ गोलापुरव श्रावकोंका एक घर है ॥ खरौवा श्रावकोंका एक घर है ॥ यह सहर बहुत बडा है ॥ २५ ॥ कानपुरसे टिकट कायमगंजका लेवे एक रुपया साडे तीन आने लगते हैं ॥ इहां मंदिर एक है ॥ श्रावकोंके घर हैं ॥ इहांसे गाडी भाडे करे ॥ पूजनकी सामग्री लेवे ॥ खानेका सामान दो दिनका लेवे ॥ कायमगंजसे कंपिला छ मील है ॥ इहां धर्मशालामें ठहरे ॥ मंदिर एक है ॥ ये नगरी तेरवें विमलनाथ स्वामीकी है ॥ इहां इनके चार कल्याणक हुये हैं ॥ गरभ जनम तप केवल ॥ इ-

हासे कायमगंज आवे ॥ २६ ॥ कायमगंजसे टिकट मेडूका लेवे ॥ २७ ॥ मेंडूसे टिकट दिल्लीका लेवे ॥ २८ ॥ दिल्लीसे टिकट अंबालेकी छावनी आदि अपने अपने देश नगर जानेका लेवे ॥ २९ ॥ ॥

अब इस यात्राके बीच दूसरी यात्रा बुंदेलखंडके तरफकी और है उसीके जानेका रस्ता लिखते हैं ॥

पिरोजाबादसे टिकट लसकरका लेवे बीचमें टोंडलेके इष्टेसनपर इस रेलसे उतरके आगरे लसकर जानेवाली रेलमें बैठे ॥ लसकरकी रेलके इष्टेसनसे दाना ओलीबजार दो मील है वहाँ चंपा बागमें खंडेलवाल श्रावकोंकी धर्मशाला है तथा दूसरी धर्मशाला तेरापंथी श्रावकोंकी है इन दोनोंमें ठहरे ॥ मंदिर पंदरा हैं ॥ चैत्यालय पाँच हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके अंदाज सातसौ घर हैं ॥ जेसवाल श्रावकोंके पैंसठ घर हैं ॥ खरोवा श्रावकोंके सात घर हैं ॥ अगरवाले श्रावकोंके पैंतीस घर हैं ॥ बरैया श्रावकोंके पैंतीस घर हैं ॥ इहांके श्रावक खानपानकी क्रिया देशकाल मुजब शुद्ध करते हैं ॥ ये सहर बहुत बडा है राजाका राज है ॥ १ ॥ इहांसे ग्वालियर दो मील है ॥ मंदिर तीन हैं ॥ चैत्यालय पंदरा हैं ॥ अगरवाले श्रावकोंके सौ घर हैं ॥ जेसवाल श्रावकोंके दश घर हैं ॥ लोइया श्रावकोंके

दश घर हैं ॥ गोलालारे श्रावकोंके तीन घर हैं ॥ इस ग्वालियरके बीच छोटा पर्वत रमनीक आठ मीलके गिरदावमें है इसके ऊपर किला है ॥ इस पर्वतके भीतरसे कोरके बडेबडे मंदिर तथा प्रतिमा बडीबडी कायोत्सर्ग पद्मासन बनाई हैं ॥ ऐसेही पर्वतके बाहिरके बाजूमें चारों तरफ गुफा सारीसे मंदिर कोरके इनमें बडीबडी प्रतिमा कोरके बनाई है ॥ इहां जरूर जावे ॥ ग्वालियरसे मुरारकी छावनी दो मील है ॥ इहां मंदिर तथा श्रावकोंके घर हैं सो दर्शन करनेको जरूर जावे ॥ इहांसे लसकर आवे ॥ २ ॥ लसकरसे सोनागिरि सिद्धक्षेत्रकी यात्रा अठारा मील है इहांका टिकट लेवे रेलसे डेढ मील सोनागिरि है ॥ इहां बडीबडी धर्मशाला है उनोंमें ठहरे ॥ इस सोनागिरिके पर्वत ऊपरसे ॥ नंदकुमार ॥ अनंगकुमारको आदिले साडेपाँच करोडमुनि मुक्त भये हैं ॥ सोनागिरिमें मंदिर बहत्तर हैं ॥ चैत्यालय एक है ॥ २ ॥ इहां हमेशा सालकीसाल मेला मंगशिर शुदीदूइजसे लगाके मंगशिर शुदी पंचमी तक होता है ॥ इहा पूजनकी सामग्री खानेका सामान मिलता है ॥ ३ ॥ सोनागिरिसे झांसी चौवीस मील है ॥ इहां उतरनेका ठिकाना तलासकरके उतरे ॥ मंदिर दो हैं ॥ चैत्यालय दो हैं ॥ सहस्त्रकूट

धातका एक है ॥ इनमें चारों तरफमें आठ प्रतिमा कमती हैं ॥ परवार श्रावकोंके ॥ गोलालारे श्रावकोंके पैंतीस घर हैं ॥ झांसीसे डेढ मील एक बाग पुराणा बहुत दिनका है इहां प्राचीन मंदिर एक है इनमें प्रतिमाका समूह है ॥ इहांके दर्शन जरूर करे ॥ झाँसीसे एक मील छावनी सदर बजारमें मंदिर एक है ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके चार घर हैं ॥ गोलालारे श्रावकोंके चार घर हैं ॥ ४ ॥ झांसीसे टिकट ललतपुरका लेवे छप्पन मील है ॥ रेलसे पाव मील ऊपर दिगंबरी मंदिर एक बडा है ॥ इहांसे डेढ मील सहरमें मंदिरके पास धर्मशाला है वहां ठहरे ॥ मंदिर तीन हैं ॥ चैत्यालय एक है ॥ परवार श्रावकोंके दोसौ पैंसठ घर हैं ॥ ५ ॥ ललतपुरसे चंदेरीकी थोवनजीकी यात्रा करनेकों जावे ॥ गाडी मजबूत होयसो साथ लेवे रस्तेमें पत्थर है ॥ पूजनकी सामग्री जादा लेवे ॥ खानेका सामान आठ दिनका लेवे ॥ ललतपुरसे चंदेरी गाडीके रस्ते इकीस मील है ॥ ६ ॥ ललतपुरसे बुढारा छ मील है ॥ मंदिर एक है ॥ परवार श्रावकोंके ॥ गोलापुरव श्रावकोंके पंदरा घर हैं ॥ इहांसे केलवाडा पाँच मील है ॥ मंदिर एक है ॥ श्रावकोंके चार घर हैं ॥ इहांसे बेदवंती नदी दो मील है बडी भारी है इसमें पत्थर बडे बडे बहुतसे हैं सो एक आदमी साथ मजबूत हुशियार लेवे इसीका हाथ पक-

डके उतरे ॥ बेदवंती नदीसे माणपुरा गांव सात मील है ॥ मंदिर एक है ॥ परवार श्रावकोंके पचास घर हैं ॥ इहांसे चंदेरी गाडीके रस्ते दो मील है ॥ मंदिर तीन हैं ॥ इनमें एक मंदिरमें चौबीस मंदिर न्यारे न्यारे शिखरबंध ध्वजा कलससहित हैं ॥ इनमें चौबीस प्रतिमा पद्मासन न्यारी न्यारी हैं ॥ एक एक प्रतिमा पौने तीन हाथ उंची पावटी शुद्धां है ॥ जैसे शास्त्रमें चौबीस महाराजके रंग लिखे हैं वैसे न्यारे न्यारे रंग हैं ॥ चंदेरीसे एक मील ऊपर पर्वत है उसमें खोदके बहुत बडी प्रतिमा कायोत्सर्ग बनाई हैं ॥ उसके पांवका पंजा लंबा चार हाथ है ॥ इस पर्वतमें औरभी प्रतिमा खोदके बनाई है ॥ चंदेरीसे पाव मील हाटकापुरा है ॥ वहां मंदिर एक है ॥ परवार श्रावकोंके पंदरा घर हैं ॥ तथा चंदेरीमें परवार श्रावकोंके पैंसठ घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके बारा घर हैं ॥ गोलापुरव श्रावकोंका एक घर है ॥ इहांसे दो मील रामनगर है वहां मंदिर एक है ॥ परवार श्रावकोंके पाँच घर हैं ॥ ७ ॥ चंदेरीसे एक आदमी रस्तेका जाननेवाला साथ जरूर लेवे ॥ इहां जंगल है ॥ इहांसे थोबनजीकी यात्रा गाडीके रस्ते ग्यारा मील है ॥ इहां मंदिर सोला हैं ॥ इनमें प्रतिमा कायोत्सर्ग उंची बीस हाथसे लगाके दो हाथकी उंची है ॥ इहां जंगल है एक मीलऊपर दो

मीलऊपर गांव है ॥ इहांसे ललतपुर आवे ॥ ८ ॥ ललतपुरसे पपोराजीकी यात्राकों जावे ॥ सडकके रस्ते चौंतीस मील है ॥ गांवगांवमें खानेका सामान सोधका मिलता है ॥ इहांसे गाडीभाडे करे ॥ पूजनकी सामग्री साथ रक्खे ॥ खानेका सामान तीन दिनका लेवे ॥ ९ ॥ ललतपुरसे गरसोरा तीन मील है ॥ मंदिर एक है ॥ परवार श्रावकोंके सोला घर हैं ॥ इहांसे शीलावन मील नौ है चैत्यालय एक है ॥ परवार श्रावकोंका एक घर है ॥ इहांसे मारोनी मील सात है ॥ मंदिर एक है ॥ परवार श्रावकोंके सौ घर हैं ॥ इहांसे खिरिया मील तीन है मंदिर एक है ॥ परवार श्रावकोंके तीन घर हैं ॥ इहांसे प्रतापगंज छ मील है ॥ चैत्यालय एक है ॥ परवार श्रावकोंके पंदरा घर हैं ॥ इहांसे टीकमगढ तीन मील है ॥ मंदिर दश हैं ॥ परवार श्रावकोंके अढाई सौ घर हैं ॥ इहांसे पूजनकी सामग्री जादा लेवे ॥ खानेका सामान पाँच दिनका लेवे ॥ इहांसे पपोराजीकी यात्रा तीन मील है ॥ मंदिर सत्तर हैं इनके सामिल चौबीस महाराजका मंदिर है इनमें न्यारी न्यारी प्रतिमा न्यारे न्यारे शिखर कलस ध्वजा सहित है ॥ इहां हमेसा सालकी साल मेला चैतबदी दुइजसे लगाके चैतबदी चौदसतक होता है बहुत आदमी इकट्ठे होते हैं ॥ १० ॥ इहांसे दोनागिरि सिद्ध-

क्षेत्रकी यात्रा करनेको जावे चौंतीस मील है ॥ इस गांव-का नाम सेंदपा है पपोराजीसे पठा तीन मील है ॥ मंदिर तीन हैं ॥ गोलालारे श्रावकोंके तीस घर हैं ॥ इहांसे एक आदमी रस्तेका जाननेवाला हुशियार साथ जरूर लेवे ॥ खानेका सामान तीन दिनका लेवे ॥११॥ पठासे समरारा चार मील है ॥ मंदिर एक है ॥ श्रा-वकोंके घर हैं ॥ इहांसे लार पाँच मील है ॥ मंदिर ए-क है ॥ श्रावकोंके बारा घर हैं ॥ इहांसे बुढेरा छ मी-ल है ॥ मंदिर दो हैं ॥ श्रावकोंके घर हैं ॥ इहांसे भ-गवा मील बारा है ॥ मंदिर दो हैं ॥ परवार श्रावकों-के तथा गोलालारे श्रावकोंके छत्तीस घर हैं ॥ इहांसे सेंदपा चार मील है ॥ ये दोनागिरि सिद्ध क्षेत्र है ॥ इ-स दोनागिरि पर्वतऊपरसे गुरुदत्त आदि मुनि मुक्तभ-ए हैं ॥ इहां मंदिर बाइस गुफा मुद्धां हैं ॥ ये पर्वत चढना उतरना पावमीलसे कमती है ॥ इस सेंदपा न-गरमें मंदिर एक है ॥ गोलापुरव श्रावकोंके बारा घर हैं ॥ इहां हमेसा सालकी साल मेला चैतबदी ती-जसे लगाके चैत सुदी तीजतक होता है बहुतसे आ-दमी इकठे होते हैं ॥ १२ ॥ सेंदपासे मलारा चार मी-ल है ॥ मंदिर एक है ॥ श्रावकोंके सात घर हैं ॥ इ-हांसे खजरायकी यात्रा तरेसठ मील है ॥ अतिशय क्षेत्र प्राचीन है किसी भाईको यात्रा करनेको जाना होय

तो रस्ता सडकका है ॥ १३ ॥ खजरायकी यात्राका रस्ता लिखते है ॥ मलारासे गुलगंज बारा मील है ॥ मंदिर एक है ॥ परवार श्रावकोंके तथा गोलापूरव श्रावकोंके आठ घर हैं ॥ इहांसे छतरपुर चौबीस मील है राजाका नगर है ॥ मंदिर पाँच हैं ॥ परवार श्रावकोंके पिछत्तर घर हैं ॥ इहांसे पूजनकी सामग्री खानेका सामान लेवे ॥ इहांसे राजनगर चौबीस मील है॥ मंदिर दो हैं ॥ परवार श्रावकोंके आठ घर हैं ॥ इहांसे खजराय तीन मील है ॥ इहां इक्कीस मंदिर शिखरबंध प्राचीन हैं ॥ करोड रुपये ऊपर लगे होयगें इनमें कोरनीका काम जादा किया है देखने लायक है ॥ बडे मंदिरमें शांतिनाथ स्वामीकी प्रतिमा कायोत्सर्ग ऊंची पौंनेदश हाथ है ॥ इहां हमेंसा सालकी साल फागुन वदी अष्टमीसे लगाके फागुन शुदी अष्टमीतक मेला होता है बहुतसे आदमी इकठे होते हैं इहांसे एक मील ऊपर वैष्णवके सोला मंदिर करोडों रुपयोंकी लागतके हैं ॥ खजरायसे तरेसठ मील मलारा आवे ॥ ॥ १४ ॥ इहांसे नैनागिरि सिद्ध क्षेत्रकी यात्रा चौवन मील है ॥ रस्ता सडकका है ॥ नैनागिरिकी यात्राका रस्ता लिखते हैं ॥ मलारासे सडवा चार मील है ॥ मंदिर एक है ॥ परवार श्रावकोंके तथा गोलापुरव श्रावकोंके पाँच घर हैं ॥ इहांसे नौ मील हीरापुर है ॥

मंदिर एक है ॥ गोलापुरवके तथा परवार श्रावकोंके पैंसठ घर हैं ॥ इहांसे अमरमोह सात मील है ॥ मंदिर एक है ॥ परवारके तथा गोलापुरव श्रावकोंके साठ घर हैं ॥ इहांसे सायगढ दो मील है ॥ मंदिर दो हैं गोलापुरव श्रावकोंके तथा परवार श्रावकोंके चालीस घर हैं ॥ इहांसे दलपतपुर छबिस मील है ॥ मंदिर तथा श्रावकोंके घर हैं ॥ इहांसे पूजनकी सामग्री जादा लेवे ॥ खानेका सामान आठ दिनका लेवे ॥ इहांसे एक आदमी रस्तेका जाननेवाला हुशियार साथ जरूर लेवे झाडी जंगलका रस्ता बिकट है ॥ दलपतपुरसे नैनागिरि सिद्ध क्षेत्र छ मील है ॥ वरदत्त आदि पाँच मुनि मुक्तभये हैं ॥ मंदिर पंदरा हैं ॥ इनमें एक मंदिर प्राचीन है बाकी सर्व नये बने हैं ॥ इहां पूजा करनेवालेका एक घर है ॥ और जैनीका घर नहीं है इहां हमेसा सालकी साल कार्तिकमें मेला होता है ॥ १५ ॥ नैनागिरिसे दमो तीस मील है ॥ रस्तेमें मंदिर तथा श्रावकोंके घर हैं ॥ इहांसे एक आदमी रस्तेका जाननेवाला जरूर लेवे ॥ जंगल झाडीका रस्ता बिकट है ॥ दमोमें मंदिर आठ हैं ॥ परवार श्रावकोंके सौ घर हैं ॥ इहांसे कुंडलपुरकी यात्रा इकीस मील है ॥ १६ ॥ दमोसे सोला मील छोटा गांव है ॥ वहां मंदिर एक है ॥ श्रावकोंके तीन घर हैं ॥ इहांसे पठेरा तीन

मील है ॥ मंदिर चार हैं ॥ परवारोंके तथा गोलापुरव श्रावकोंके नौ घर हैं ॥ इहांसे पूजनकी सामग्री जादा लेवे ॥ खानेका सामान छ दिनका लेवे ॥ पठेरासे कुंडलपुरकी यात्रा दो मील है ॥ धर्मशाला आदिमें ठहरे ॥ इहां पर्वत पौन चंद्राकार है ॥ इस ऊपर बडे-बडे मंदिर पचास हैं ॥ नीचे तलावके किनारे मंदिर बारा हैं ॥ सर्व मंदिर बासठ हैं ॥ सर्व मंदिर दो मीलके गिरदावमें हैं ॥ पर्वत चढना उतरना आधा मील है ॥ इस पर्वत ऊपर महावीर स्वामीका मंदिर बडा है ॥ इनमें महावीर स्वामीकी प्रतिमा पद्मासन ऊंची पौंने आठ हाथ है ॥ पांवकी पलोठी दोनों गोडेतक चौडी साढेसात हाथ है ॥ सीढी लगाके प्रक्षाल करते हैं ॥ कुंडलपुरसे पठेरा आवे ॥ १७ ॥ और इलाहाबादसे रेल इस देशमें आनेवाली है सो उस बखत इहांसे इलाहाबाद जानेका जो रस्ता निकलेगा तब उस रस्तेसे इलाहाबाद जाना ॥ अब जो इस बखत इहांसे रस्ता जानेका मोजुद है सो लिखते हैं ॥ पठेरासे गाडी भाडेकरे ॥ चार दिनका खानेका सामान लेवे ॥ एक आदमी रस्तेका जाननेवाला साथ जरूर लेवे ॥ पठेरासे मुडवाराका इष्टेसन चौवन मील है ॥ रस्तेमें मंदिर तथा श्रावकोंके घर हैं ॥ १८ ॥ मुडवारेमें मंदिर तीन हैं ॥ परवारआदि श्रावकोंके घर हैं ॥ १९ ॥

मुडवारासे टिकट इलाहाबादका लेवे ॥ २० ॥ और जो किसीकों बुंदेल खंडकी तरफकी यात्रा करनी होय तो पिरोजाबादसे लसकर सोनागिरि होके ललतपुरसे बुंदेल खंडके देशकी यात्रा करके इलाहाबाद आवे इहांसे शिखरजीके तरफकी सर्व यात्रा करे ॥ और जो किसीको बुंदेलखंडके देशकी यात्रा नहीं करनी होय तो पिरोजाबादसे टिकट इलाहाबादका लेवे ॥ फिर शिखरजीके तरफकी यात्रा करे ॥ २१ ॥ ये जो ऊपर लिखि यात्रा शिखरजीके तरफकी सर्व तथा बुंदेल खंडके देशकी सर्व यात्रा करे तो इनमें तीन महीने लगते हैं ॥ इनमें एक आदमीका खरच रेलगाडीका बैलगाडीका घोडागाडी इक्के आदिका किराया मै भोजनके खरच शुद्धां पचास रुपये लगते हैं ॥ और पूजनकी सामग्रीका तथा मंदिरके भंडारमें देनेका वा दुखित भुखेको देनेका इन आदि धर्मकार्यके रुपये खरचके न्यारे लगते हैं ॥ २२ ॥ ये यात्राकी छोटी पुस्तक प्रथम भागकी सवाई जयपुरवाला दुलीचंद पाक्षिक श्रावकने पंजाव देशके नजीक सहारनपुरमें बनाई नुकडवाले दयाचंद अगरवाले श्रावककी माता मनोहरी बाईके कहनेसे ये बाई विद्वान् धर्मात्मा दृढ श्रधानी खानपानकी क्रिया शुद्ध करनेवाली बडे घरकी बेटी तथा बहू है ॥ ये पुस्तक जैन धर्मियोंकी यात्राकी है संवत १९४४ पौष शुदी ७ बुधवारके रोज तयारकी है ॥ २३ ॥ इति प्रथम भागः

॥ श्री ॥

॥ जैनयात्रादर्पण द्वितीयभाग ॥

इस दूसरे भागमें बाहुबलीकी जैनबद्री मोडबद्री कारकलआदिके तरफकी सर्व यात्रा है ॥ तथा गिरनार मांगीतुंगी मुक्तागिरिआदिके तरफकी सर्व यात्रा है इनके जानेके ठिकाने खुलासा लिखे हैं इसीको अव्वलसे आखिरतक सबको बांचके बिचारकरके फिर यात्रा करनेको जावे.

इस दोनोंभागकी यात्रा सिवाय जो बाकी रही यात्रा सिद्धक्षेत्रोंकी वा भगवानके जन्म नगरीकी यात्रा सो इस दूसरे भागके पुस्तकके पिछाडीके अंतके पत्रमें लिखी है सो इनके ठिकाने मालुम नहीं हैं सो इसीको बांचके सबको सुनावे जो किसीको इनके ठिकाने मालुम होय तो सर्व देशमें लिख भेजें.

अथ जैनधर्म्मियोंकी तीर्थयात्रा वर्णन करते हैं॥ दिल्ली आगरेसे दक्षण दिशाके तीर्थोंकी क्रमसे प्रथम सिद्धक्षेत्रोंके नाम॥ फिर इन क्षेत्रोंमें मुक्त भए मुनिजनोंकी संख्या॥ फिर अतिशय क्षेत्रोंके नाम॥ और इनके मार्गमें जो जो मंदिर तथा जो जो चैत्यालय आवते है॥ उनकी संख्या॥ और जिसनगरमें वा जिसग्रॉंममें श्रावकोंके जितनी जातके घर आवेंगे उनकी अंदाज संख्या॥ और रस्तेमें बडे छोटे नगर आवेंगे उनके नाम॥ जहां रेल बदलेगी उस ग्रॉंमका वा नगरका नाम॥ और जिस नगरका वा ग्रॉंमका टिकट लेवेंगे उसका नाम॥ रस्तेमें जो वस्तु खानेकी आदि चाहिए सो जिस नगरमें जैनी श्रावक होवे उनकीमारफत लेवे तो सोधकी अच्छी मिलेगी॥ और गाडी घोडा आदि भाडे करना होवे तो इनकीमारफत करे तो फायदा रहेगा॥ और सर्व बातकी जुम्मेंदारी इनकी रहेगी॥ इस यात्राके रस्तेमें जाडेके दिनोंमें ठंड बहुत कमती पडती है सो आधसेर रूईकी एक रजाई लेवे॥ कमरी एक रूईकी लेवे॥ बिछानेको जो चाहिए सो लेवे॥ और जिस नगरमें बडी प्रतिमा होवेगी उसकी ऊंचाइ चौडाईकी जहांकी प्रमाणकी संख्या लिखेंगे सो दुलीचंदके हाथकी जाननी॥ अब सिद्धक्षेत्रोंके नाम लिखते हैं॥ बडवानि १ सिद्धवरकूट २ मुक्तागिरि ३ मांगीतुंगी ४

गजपंथ ५ कुंथलगिरि ६ पावागढ ७ शत्रुंजय ८ गिरनार ९ तारंगा १० ये दश सिद्धक्षेत्र भये ॥ अब अतिशय क्षेत्रों-के नाम लिखते हैं ॥ बनेडा १ ज्ञातकुली २ रामटेक ३ श्रवणबेलगुल ४ हलीबीड ५ एनूर ६ मोडबद्री ७ का-रकल ८ आबूगढ ९ ॥ अतिशय क्षेत्र उसको कहते हैं जहां हमेशा बारों महीने जात्री लोग आते जाते रहैं ॥ जो ये ऊपर लिखे सर्व यात्राके नाम तिनके जानेका र-स्ता लिखते हैं ॥ प्रथम दिल्लीसे प्रारंभ किया है ॥ दि-ल्लीमें मंदिर दिगंबरी बारा हैं ॥ चैत्यालय ग्यारा हैं ॥ अगरवाले श्रावकोंके अंदाज तेरासौ घर हैं ॥ खंडेल-वाल श्रावकोंके सत्तर घर हैं ॥ मारुवाडी अगरवाले-श्रावकोंके दश घर हैं ॥ दिल्ली सहर बहुत बडा है ॥ एक लाखके हजार घर हैं ॥ १ ॥ दिल्लीसे टिकट अ-लवरका लेवे ॥ रेलसे एक मील राजाकी धर्मशाला बडी है वहां ठहरें ॥ इहांसे आधे मील बडे बजारके नजीक मंदिर पाँच हैं ॥ चैत्यालय तीन हैं ॥ अगरवाले श्रावकोंके तीनसौ घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके ए-कसौ तेइस घर हैं ॥ सैलवाल श्रावकोंके सात घर हैं ॥ ॥ २ ॥ अलवरसे टिकट जयपुरका लेवे बीचमें बां-दीकुईमें रेल बदलती है इस रेलसे उतरके जयपुर जा-नेवाली रेलमें बैठे रेलकेपास दो मंदिर हैं ॥ वहां धर्म-

शालामें ठहरें ॥ इहांसे जयपुर सहर दो मील है साँगानेर दरवाजेके पास नथमलजीका कटडा वडा है वहां सर्व वातका आराम है इनमें ठहरें ॥ और तेरा पंथीके बडे मंदिरसे एक आदमी मालीको साथ लेवे ॥ प्रथम सहरके भीतरके मंदिर चैत्यालयके दर्शन करे १ फिर मोहन बाडीमें करे २ घाटमें ३ खान्यामें ४ जगांकी वावडीके पास ५ हुकमजीवजके ॥ नंदलालजीके ॥ संगहीजीके मंदिरके दर्शन करे ६ खोमें ७ कीर्त्तमके नसियाकेपास मंदिरके ८ आमेरके ९ जयपुर आते रस्तेमें दो मंदिरके १० साँगानेरके मंदिरके ११ रोडपुराके मंदिरके १२ रामवागके पासके मंदिरके १३ चांदपोल दरवाजेकेपास लखमीचंद बोहराके मंदिरके १४ रेलके पासके मंदिरके १५ ऐसे मंदिर चैत्यालय सर्व एकसौ अस्सी हैं ॥ इन सर्वके दर्शन करे ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके चारहजार घर अंदाज हैं ॥ अगरवाले श्रावकोंके अढाइसौ घर हैं ॥ ओसवाल दिगंबरीके दो घर हैं आगे जादाथे ॥ और आगे पचास वर्ष पहली जैनी श्रावक दिगंबरोंके सात हजार घर थे ॥ इस नगरमें हमेशा उत्सवमेला रथयात्रा होती है ॥ यह सहर बहुत बडा है ॥ इंद्रपुरीसमान साक्षात जैनपुरी है देखने लायक है इस शहर बराबर जैनमतका और शहर किस

देशमें नहीं है ॥ जिन्होने जयपुरके मंदिरके दर्शन नहीं कीये उनका जन्म वृथा है ॥ ३ ॥ जयपुरसे टिकट अजमेरका लेवें ॥ रेलसे आधे मील मूलचंद सेठका मंदिर डाकखानेकेपास है वहां ठहरें आरामकी जगे है ॥ इस सहरमें मंदिर दश हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके चारसौ घर हैं ॥ खानेका सामान सोधका मूलचंद सेठके मकानसे लेवे ॥ ४ ॥ अजमेरसे टिकट रतलामका लेवे छपहरमें पहुंचती है ॥ रेलसे डेढ मील चांदनीचौकमें जाके तलास करके धर्मशालामें ठहरें ॥ मंदिर चार हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके सवासौ घर हैं ॥ हुंबड श्रावकोंके पच्चीस घर हैं ॥ अगरवाले श्रावकोंके पंदरा घर हैं ॥ जेसवाल श्रावकोंके तीन घर हैं ॥ ५ ॥ रतलामसे टिकट इंदौरका लेवे ॥ रेलसे एक मील तात्याकी बावडीकेपास खंडेवाल श्रावकोंकी धर्मशाला है वहां ठहरें ॥ मंदिर आठ हैं ॥ और बेणीचंदजी हुंबडश्रावकोंके मकान ऊपर चैत्यालय एक है ॥ इनमें तीन चौवीसीकी बहत्तर प्रतिमा स्फटिककी हैं ॥ और बडे मंदिरोंमेंभी इन्हुने स्फटिककी बडी प्रतिमा बिराजमानकी हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके आठसौ घर हैं ॥ नरसिंगपुरा श्रावकोंके पचास घर हैं ॥ औरभी जातके श्रावकोंके घर हैं ॥ इहांके श्रावक पक्के श्रद्धानी

हैं ॥ खान पानकी क्रिया देशकालमुजिब शुद्ध करते हैं ॥ रसोइ जिमानेकी धर्मशाला मालवाके सारे देशमें न्यारी हैं ॥ इंदोरसे दो मील बंशारी साहबकी छावनी है ॥ वहां मंदिर एक है ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके तीस घर हैं ॥ इंदोरसे सोला मील बनेडानगर है ॥ गाडी भाडे करके तीन दिनका खानेका सामान लेवें ॥ पूजनकी सामग्री लेके जावे ॥ वहां मंदिर एक बहुत बडा है ॥ प्रतिमाके समूह बहोतसे हैं ॥ यह मंदिर तथा प्रतिमा बहुत वर्षोंकी प्राचीन है ॥ इहां सालकी सालमेला चैत शुदी एकादशीसे लगाके चैतशुदी पूर्णिमातक होता है ॥ इहांसे इंदोर आवे ॥ इंदोरसे बडवानीकी यात्रा करनेको जावे ॥ गाडीभाडे करे पाँच दिनका खानेका सामान लेवे ॥ ६ ॥ इंदोरसे बडवानी सिद्धक्षेत्र नब्बे मील है ॥ इनके जानेका रस्ता लिखते हैं ॥ इंदोरसे मौकी छावनी चौदा मील है ॥ मंदिर तीन हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके सौ घर हैं १ इहांसे पलास्याग्रॉंम तीन मील है ॥ मंदिर एक है खंडेलवाल श्रावकोंके आठ घर हैं १ इहांसे मानपुरग्रॉंम बारा मील है ॥ मंदिर एक है खंडेलवाल श्रावकोंका एक घर है १ इहांसे बारा मील गुजरीका पहाड है ॥ वहां मंदिर एक है खंडेलवाल श्रावकोंके तीन घर हैं १ इहांसे बारा मील

खलघाट है १ इहासे छ मील धरमपुरी है ॥ मंदिर एक है ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके पचास घर हैं १ इहांसे बारा मील बांकानेरी है ॥ मंदिर एक है ॥ खंडेल वालश्रावकोंके पचास घर हैं १ इहांसे बारा मील अंजड ग्राँम है ॥ मंदिर एक है ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके बारा घर हैं १ इहांसे बडवानी बारामील है ॥ इहां दो धर्मशाला बडी हैं वहां ठहरें ॥ मंदिर एक है ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके चालीस घर हैं ॥ इहांसे पूजनकी सामग्री लेके चले चार मील ऊपर सोला मंदिर नये बने हैं ॥ इनकी प्रतिष्ठा संवत १९४० के माघ शुक्ल तृतीयाको हुई है ॥ इहांसे आगे एक मील चूलगिरिपर्वतके ऊपर एक मंदिर प्राचीन है इनमें प्रतिमाका समूह है ॥ इस बडवानी नगरके दक्षण आगके चूलगिरिपर्वतके शिखर विषय इंद्रजीत और कुंभकरण ये दो मुनि मुक्ति गये हैं ॥ इहांसे पूजाकरके बडवानी नगरमे आवे ॥ ७ ॥ बडवानी नगरसे चले सो जिस रस्तेसे आयेथे उस रस्ते होके मौकी छावनी आवे ॥ ८ ॥ मौकी छावनीसे टिकट सनावदका लेवे ॥ मंदिर एक नया बना है ॥ पोरवार श्रावकोंके पचास घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके सात घर हैं ॥ इहांसे छमील सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र है ॥ सनावदसे गाडी भाडे करे ॥ तीन दि-

नका खानेका समान लेवे ॥ पूजनकी सामग्री लेवे । इहांसे बैषणवका तीरथ ओंकार छमील है वहां जावे । इस नगरमें सारा सामान रखे ॥ इहांसे पूजनकी सामग्री लेवे ॥ आठ आनेके पैसे लेवे ॥ धोती दुपट्टे लेवे नरमदा नदी बडी है नावमें बैठके उतरे फिर ओंकारके मंदिरके आगेहोके जावे इहांसे आधे मील ऊपर कावेरी नदी है सो उतरके स्नानकरके पूजनकी सामग्री धोके सामने पंथ्याग्रामसे एक आदमी साथ लेवे इहांसे पाव मील सिद्ध वरकूट है इहांसे साडेतीन करोडमुनि॥ दोचक्रवर्त्ति दशकामदेव मोक्ष भये हैं ॥ इहां नया मंदिर तथा धर्मशाला बनती है ॥ इहांसे सनावद आवे ॥ ९ ॥ सनावदसे टिकट दिनके बारावजे पीछे उमरावतीका लेवे सो दिन उगते उतरे परंतु बीचमें तीन ठिकाने रेल बदलती है ॥ खंडवामें ॥ भुसावलमें ॥ उमरावतीसे तीन कोश इस तरफ इष्टेसन बनेरेका है ॥ इस रेलसे उतरके उमरावती जानेवाली रेलमें बैठे ॥ रेलके सामने धर्मशाला है उनमें ठहरें ॥ मंदिर पाँच हैं ॥ परवार श्रावकोंके पच्चीस घर हैं ॥ सैतवाल-श्रावकोंके घर हैं ॥ लाडश्रावकोंके घर हैं ॥ बघेर-वाल श्रावकोंके घर हैं ॥ नेवाश्रावकोंके घर हैं ॥ गंगे-रवाल श्रावकोंके घर हैं ॥ धक्कड श्रावकोंके घर हैं ॥ काम

ओज श्रावकोंके घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके घर हैं ॥ इन सर्वजातके श्रावकोंके अंदाज चारसौ घर हैं ॥ १० ॥ इहांसे गाडीभाडे करे ॥ पूजनकी सामग्री जादा लेवे ॥ खानेका सामान दशदिनका लेवे ॥ उमरावतीसे तीस मील मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र है ॥ रस्तेमें छोटे गांवोंमें श्रावकोंके घरोंमें प्रतिमा है ॥ और रस्तेमें बीस मील ऊपर अतवाडकी छावनीमें मंदिर एक है ॥ खंडेलवाल श्रावक आदि जातके घर हैं ॥ इहांसे आगे दश मील मुक्तागिरि सिद्ध क्षेत्र है ॥ वहां पर्वतके नजीक धर्मशाला है उनमें ठहरे ॥ इस मुक्तागिरि पर्वत ऊपरसे साडेतीन करोड मुनि मुक्ति गये हैं ॥ मंदिर बडे छोटे सर्व पच्चीस हैं ॥ इहां देव हैं उसीको जिनेंद्रकी भक्ति है सो केशरकी बर्षा करते है ॥ ११ ॥ मुक्तागिरिसे येलजपुर आवे ॥ इहां मंदिर चैत्यालय हैं ॥ इहां कै जातके श्रावकोंके घर हैं ॥ इहां हीरालालजी बघेरवाल श्रावकके मकान ऊपर चैत्याला है उसीमें प्रतिमाका समूह है ॥ इनमें एक प्रतिमा मूंगेकी कायोत्सर्ग ऊंची पाँच उंगलकी है ॥ १२ ॥ येलजपुरसे भातकुली आवे ये अतिशय क्षेत्र है ॥ मंदिर पाँच हैं ॥ इहांसे उमरावती आवे ॥ १३ ॥ उमरावतीसे टिकट नागपुरका लेवे ॥ रेलसे डेढ मील पंचायती मंदिर

श्रावकोंका है वहां धर्मशाला आदिमें ठहरे ॥ मंदिर तेरा हैं ॥ परवार श्रावकोंके पच्चीस घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके घर हैं ॥ पुरवार श्रावकोंके ॥ लाड श्रावकोंके ॥ धक्कड श्रावकोंके घर हैं इन आदि के जातके श्रावकोंके घर हैं ॥ ये सहर बहुत बडा है ॥ १४ ॥ नागपुरसे टिकट कामठीकी छावनीका लेवे नौ मील है ॥ मंदिर पाँच हैं ॥ परवार श्रावकोंके तीस घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके तीस घर हैं ॥ इहांसे रामटेककी यात्रा करनेको जावे ॥ गाडीभाडे करे ॥ पूजनकी सामग्री लेवे ॥ खानेका सामान पाँच दिनका लेवे ॥ १५ ॥ कामठीकी छावनीसे पंदरा मील रामटेक नगर है ॥ यह अतिशय क्षेत्र है बारों महीने यात्रा करनेकों आते हैं ॥ इहां मंदिर बडे छोटे आठ हैं ॥ इनमें शांतिनाथ स्वामीका मंदिर बहुत बडा है ॥ इनमें शांतिनाथ स्वामीकी प्रतिमा तीन कायोत्सर्ग हैं इनमें बिचली प्रतिमा बहुत बडी है सो सीढी लगाके प्रक्षाल करते हैं ॥ इहांसे कामठीकी छावनी आवे ॥ १६ ॥ कामठीकी छावनीसे टिकट नांदगांवका दिनके बारा बजे पीछे लेवे रेलसे गांवमें जाके धर्मशालामें ठहरे ॥ मंदिर एक है ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके साठ घर अंदाज हैं ॥ इनकी मारफत गाडीभाडे ठेकेमें करे ॥ रोजिन-

दारीमें नहीं करे ॥ मांगीतुंगी गजपंथकेवास्ते ॥ पूजनकी सामग्री लेवे ॥ खानेका सामान बारा दिनका लेवे ॥ रस्ता सडकका है ॥ १७ ॥ नांदगांवसे मांगीतुंगी साठ मील है ॥ रस्तेमें मालेगांव नगर बडा आता है ॥ मंदिर चैत्यालय हैं ॥ श्रावकोंके घर हैं ॥ इहांसे एक मील छावनी है वहां सदर बजारमें मंदिर एक है ॥ श्रावकोंके घर हैं ॥ ॥ इहांसे आगे सटाना गांव है ॥ मंदिर एक है ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके चार घर हैं ॥ इहांसे आगे मांगीतुंगी अठारा मील है ॥ इहां मंदिर दो हैं ॥ और पर्वत ऊपर मंदिर दो हैं ॥ चंद्रप्रभु स्वामीका ॥ पार्श्वनाथ स्वामीका ॥ और प्रतिमा भी न्यारी हैं ॥ इस पर्वत ऊपरसे ॥ रामचंद्र ॥ हनुमान ॥ सुग्रीव ॥ गवय ॥ गवाख्य ॥ नील ॥ महानील ॥ आदि निन्नानवेंकरोड मुनि मुक्ति गये हैं ॥ इस पर्वतसे उतरके सुधबुद्धके तरफ आवे इहां मंदिर गुफामें दो हैं ॥ मांगीतुंगीसे गजपंथ सिद्धक्षेत्रकी यात्राको जावे पिच्यासी मील है ॥ रस्ता सडकका है ॥ रस्तेमें मंदिर नहीं हैं ॥ नाशकसे बीस मील इस तरफ पीपला गांवमें स्वेतंबरके मंदिरमें दिगंबर एक प्रतिमा है ॥ खंडेलवाल श्रावकका एक घर है ॥ १८ ॥ मांगीतुंगीसे नाशक अस्सी मील है ॥ नाशकमें गंगा नदीके

किनारे पंचवटीमें धर्मशालामें ठहरे ॥ गांवमें मंदिर एक है ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके पंदरा घर हैं ॥ इहांसे छ दिनका खानेका सामान लेवे ॥ पूजनकी सामग्री लेवे ॥ १९ ॥ नाशकसे चार मील सिरोई छोटा गाव है ॥ खंडेलवाल श्रावकका एक घर है ॥ वहां धर्मशालामें ठहरे ॥ मंदिर एक है ॥ इहांसे स्नानकरके पूजनकी सामग्री धोके चले सो एक मील श्रीगजपंथका पर्वत है ॥ इस ऊपरसे सात बलभद्र ॥ जादोनरेंद्र आदि आठ करोड मुनि मुक्ति गए हैं ॥ इहां मंदिर हैं ॥ २० ॥ इस गजपंथसे नाशकका इष्टेसन दश मील है ॥ इहांसे पुनाका टिकट लेवे ॥ बीचमें कल्याणीभीवरीके इष्टेसन ऊपर इस रेलसे उतरके पुना जानेवाली रेलमें बैठे ॥ पुनामें रेलके इष्टेसनकेपास धर्मशाला है वहां ठहरे ॥ जो चार पाँच आदमी होय तो येतालपेठमें जाके ठहरे ॥ इहांसे दो मील येतालपेठ बजार है वहां स्वेतंबरका पंचायती बडा मंदिर है उसके बराबर दिगंबरमंदिर एक है ॥ दूसरा मंदिर मीठगंजमें है ॥ ऐसे मंदिर तीन हैं ॥ चैत्यालय पाँच हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके घर हैं ॥ हुंबड श्रावकोंके घर हैं ॥ सेतवाल श्रावकोंके घर हैं ॥ चतुर्थ श्रावकोंके घर हैं ॥ पंचम श्रावकोंके घर हैं ॥ ये सहर बहुत बडा है एक लाख कै हजार घर हैं ॥ और

इन सहरसे न्यारी चार छावनी अंगरेजोंकी हैं ॥ २१ ॥
पुनासे टिकट रातको कुरडुकी वाडीका लेवे सो दो पहरमें पहुंचे ॥ रेलके सामने धर्मशाला बडी है वहां ठहरे ॥ मंदिर एक बहुत छोटा है ॥ हुंबड श्रावकोंके नौ घर हैं ॥ इनकेमारफत गाडी भाडे ठेकेमें करे ॥ पूजनकी सामग्री लेवे ॥ खानेका सामान छ दिनका लेवे ॥ रस्तेमें खानेका सामान मिलता है ॥ और रस्तेमें छोटे गांवोंमें श्रावकोंके घरोंमें प्रतिमा हैं सो दर्शन करे ॥ और किसीकेपास कोरे कपडे ॥ रंगेवस्त्र घडीबंध ॥ नये बरतन इन आदि कोई नई बस्तु होय सो कुरडुकी वाडीमें हुंबड श्रावकोंके सुपुर्द करे फिर आती बखत लेवे ॥ रस्तेमें हैदराबादवालेका राज है सो राहदारीवाले हैं सो एक आनेकी कोइ बस्तु नई होय तो उसका महसूल लेके तकलीफ देते हैं ॥ २२ ॥
कुरडुकी वाडीसे कुंथगिरि पर्वत सिद्धक्षेत्र चालीस मील है ॥ इहांसे सोला मील बारसीनगर है ॥ इहां मंदिर एक है ॥ सेतवाल श्रावकोंके घर हैं ॥ हुंबड श्रावकोंके घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके घर हैं ॥ और वंस्थल पर्वतके निकट भाग पश्चिमदिशामें कुंथुगिरिके शिखरमें कुलभूषण देशभूषण मुनि मुक्ति गये हैं ॥ इस पर्वत ऊपर मंदिर शिखरबंध छ हैं ॥ नीचे मंदिर

एक छोटा है ॥ इहांसे कुरडूकी वाडी आवे ॥ २३ ॥
इहांसे बाहुबलीजीकी ॥ जैनबद्रीकी ॥ मोडबद्री आदिके तरफकी यात्रा करनेको जावे ॥ तथा धवल ॥ महाधवल ॥ जयधवल ॥ विजयधवल आदि सिद्धांत शास्त्रका दर्शन ॥ तथा रत्नोंकी प्रतिमाका दर्शन करने होय तो इहांसे जावे ॥ और किसीको नहीं जाना होय तो कुरडूकी बाडीसे रातके दशबजे टिकट बंबइका लेवे दूसरे रोज ग्याराबजे दिनके बंबइमें उतरे ॥ २४ ॥
अब जैनबद्री मोडबद्री आदिकी यात्रा जानेका रस्ता लिखते है ॥ कुरडूकी वाडीसे टिकट सोलापुरका लेवे दो घंटेमें रेल पहुंचती है ॥ रेलसे एक मील तलावके पास धर्मशाला है वहां ठहरे ॥ मंदिर तीन हैं ॥ चैत्यालय पच्चीस हैं ॥ हुंबड श्रावकोंके छप्पन घर हैं ॥ सेतवाल श्रावकोंके सौ घर ऊपर हैं ॥ काशार श्रावकोंके छबीस घर हैं ॥ पंचम श्रावकोंके दश घर हैं ॥ चतुर्थ श्रावकोंके घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके दो घर हैं इस सहरमें पच्चीस हजार घर अंदाज वस्ती है ॥ और किसीकेपास बोझ जादा होय ॥ अथवा कपडा बरतन आदि कोई वस्तु नई होय तो इस सोलापुरमें ठिकाना फलटणगलीमें सखारामजी हीराचंदजी हुंबड श्रावक है सो नेमीचंदजीके पुत्र हैं सो जो वस्तु रखनी होय

सो इनके सुपुर्द करे ॥ फिर आती वखत इहांसे लेवे ॥ ये लायक आदमी धनवान है धर्मके रोचक हैं इनके तीन बडे भाई और हैं जोतीचंदजी गौतमजी रामचंदजी ये पाँचों भी धर्मके रोचक विद्वान शुद्ध दिगंबर आमनायवाले हैं इनके पिता नेमीचंदजी शुद्ध तेरापंथी पक्के सरधानी थे ॥ इस नगरमेंसे खानेका सामान जो चाहिये सो पंदरादिनका लेवे ॥ २५ ॥ सोलापुरसे टिकट श्यामको रायचूरका लेवे सो चार पहरमें सूरज उगते उतरे ॥ रेलके सामने बडी धर्मशाला है वहां ठहरे ॥ इहांसे एक मील ऊपर किला है वहां एक दिगंबर मंदिर है सो वहां जाके दर्शन करके जरूर आयके रसोई जलदी बनायके जीमके रेलके इष्टेसनपर ग्याराबजे आवे ॥ बंबइकी रेल दिनके साडेग्याराबजे इहांतक आती है ॥ आगे रायचूरसे मदराज हाथेकी रेल न्यारी जाती है ॥ २६ ॥ रायचूरसे दिनके साडेग्याराबजे टिकट आरकोनका लेवे सो दूसरे रोज दिन उगते पहलीपाँचबजे रेलसे उतरे ॥ रेलसे नजीक धर्मशाला है वहां ठहरे ॥ इस देशमें इसीको छतर कहते है ॥ आरकोनसे मदराज सहरके आनेजानेके रेलके भाडेके दशआने लगते हैं ॥ किसीको जाना होय तो देख आवे ॥ २७ ॥ आरकोनसे रातके आठबजे

टिकट विंगलौर सहरका लेवे ॥ बीचमें ज्वालारपेठके इष्टेसनऊपर रातको बाराबजे इस रेलसे उतरके विंगलौर जानेवाली रेलमें बैठे सो दिन उगते सातबजे उतरे ॥ रेलसे थोडी दूर तलाव है वहां जैनका छतर है उनमें ठहरे ॥ इसका नाम धर्मशाला है ॥ इहांसे पाव मील बडे बजारके नजीक गलीमें जिनापा श्रावकके घरके नजीक एक दिगंबर मंदिर है ॥ इस विंगलौरमें पंचम श्रावकोंके बीस घर हैं ॥ इस देशमें ये सहर बहुत बडा है ॥ और छावनी न्यारी है सो बहुत बडी है ये सहर मैसूरके राजाका है ॥ २८ ॥ विंगलौरसे टिकट मैसूरका लेवे ॥ तीनपहरमें रेल पहुंचती है ॥ रेलसे एक मील बजार है ॥ वहां तिमापा मोती काने पंचम श्रावक लखपती असामी है ॥ इनके इहां बडा मकान है वहां ठहरे ॥ इन सेठके चार बेटे हैं ॥ शांतराज ॥ अनंतराज ॥ ब्रह्मसूरि ॥ पद्मराज ॥ और तिमापाके बडे भाइ वीरापा है इनके भी बेटे हैं ॥ मंदिर एक है ॥ चैत्यालय चार हैं ॥ ये सहर बडा है राजाका राज है ॥ इहां राजंना श्रावक है सो संस्कृत विद्या पढा है ॥ इहांसे गाडीभाडे करे ॥ तीन दिनका खानेका सामान लेवे ॥ इहांसे बाहुबलीकी यात्राको जावे ॥ पचास मील है ॥ २९ ॥ मैसूरसे

नौ मील रंगपटण है ॥ मंदिर एक है ॥ जैनी ब्राह्म-
णोंके घर हैं ॥ इहांसे आगे इकतालीस मील श्रवण-
बेलगुल है ॥ इहां धर्मशालामें ठहरे ॥ इस नगरमें मं-
दिर आठ हैं ॥ चैत्यालय छ हैं दोनों पर्वतऊपर मंदिर
बावीस हैं ॥ पट्टाचारीके मंदिरमें संदूकमें ॥ लालकी
प्रतिमा दो हैं ॥ सोनाकी चांदीकी दो प्रतिमा हैं ॥ इ-
हांसे बाहुबलीके पर्वत ऊपर जावे ॥ मंदिर आठ हैं ॥
इहां श्रीबाहुबली स्वामीकी प्रतिमा कायोत्सर्ग बहुत
ऊंची है ॥ इनके पांवका पंजा लंबा साडेपांच हाथ है ॥
इस बाहुबली स्वामीके दोनों पावके दोनों बगलमें प-
त्थरके दो पर्वत बहुत छोटे हैं ॥ इनके बांये बाजूमें
लिखा है के विक्रमके संवत छहसौ में चामुंड राजा
हुवा है ॥ इस पर्वतके सामने दूसरा चिकबेट पहाड
है ॥ इसके ऊपर चौदा मंदिर हैं ॥ एक मंदिरमें प्रति-
मा कायोत्सर्ग ऊंची है सीढी लगाके प्रक्षाल करते
हैं ॥ श्रवण बेलगुलमें शास्त्र संस्कृत प्राकृत तथा क-
रनाटकी भाषाके चारों अनुयोगके ताडके पत्र ऊपर
लिखे हजारों हैं मंदिरमें तथा ब्राह्मणोंके घरोंमें है ॥ सू-
रशास्त्री ब्राह्मण संस्कृत विद्या पढे है ॥ इहां जैनी ब्रा-
ह्मणोंके अंदाज पच्चीस घर हैं ॥ जैनी कासारके बीस
घर हैं ॥ श्रवण विलगुलसे जिननाथपुरा ग्रांम डेढ

मील है ॥ वहा मंदिर एक है ॥ लाख रुपये अंदाज लगे होयगें ॥ जो कोई जैनी भाई श्रावक यात्राको जावे तो इस मंदिरके जीर्ण उद्धार करनेको अपनी सक्ती माफीक द्रव्य जरूर देवे इहांसे मोडवद्री आदिकी यात्रा करनेको जावे ॥ एकसौ अस्सी मील अंदाज है ॥ गाडीभाडे ठेकेमें करे ॥ रोजिनदारीमें नहीं करे ॥ पंद्रा दिनका खानेका सामान गेहुंका आटा आदि लेवे ॥ चांवल रस्तेमें बहुत मिलते हैं ॥ रस्ता सडकका है ॥ किसी बातका भय नहीं है ॥ ३० ॥ श्रवण बिलगुलसे दो मील हेली ग्रॉम है ॥ एक मंदिर है ॥ श्रावकोंके दो घर हैं ॥ इहांसे चंद्राय पट्टण छ मील है ॥ इहांसे सोला मील शांतग्रॉम है ॥ मंदिर एक है ॥ श्रावकोंके चार घर हैं ॥ आगे आठ मील हसन नगर बडा है ॥ मंदिर दो हैं ॥ पंचम श्रावकोंके पचास घर हैं ॥ जैनी ब्राह्मणोंके पाँच घर हैं ॥ इहांसे हलीबीडकी यात्रा बीस मील है ॥ मंदिर तीन हैं ॥ शांतिनाथ स्वामीकी ॥ पार्श्वनाथस्वामिकी ए दो प्रतिमा कायोत्सर्ग ऊंची अंदाज सोला हाथ है ॥ ॥ ३१ ॥ इहांसे बेलोर दश मील है बडा नगर है ॥ इहांसे बाइस मील गिरामबीजरुल्ली छोटा ग्रॉम पहाडमें झाडीमें है ॥ इहांसे सोला मील अंगरेजोंकी

चौकी है एक गाडीके चार आने लेते हैं इहांसे नि-
गडग्रॉंम सोला मील है ॥ इहां शांतिनाथ स्वामीका
एक मंदिर है ॥ इहांसे गुरवाई ग्रॉंम है ॥ मंदिर तीन
हैं ॥ ये नगर उजाड है ॥ इहांसे आगे अंगरेजोंकी दू-
सरी चौकी है एक गाडीके चार आने लेते हैं ॥ इ-
हांसे नौमील एनोर नगर है ॥ इहां ब्राह्मणोंके मका-
नोंमें ठहरे मंदिर आठ है ॥ इहां एक कोट पत्थरका
बडा बना है ॥ इसके भीतर पत्थरकी बडी बेदी बनी
है ॥ इसके ऊपर श्रीबाहुबली स्वामीका प्रतिबिंब
कायोत्सर्ग बडा विराजमान है ॥ इनके पांवका पंजा
लंबा अंदाज पौनेतीन हाथ है ॥ इनकी प्रतिष्ठा शाके
तेरासौ इकतीसके शाल हुई है ॥ इहां फागुण शुदि
पूर्णिमाको रथ यात्राका उत्सव होता है ॥ जैनी ब्रा-
ह्मणोंके पंदरा घर हैं ॥ ३२ ॥ इहांसे बारा मील मो-
डबद्री नगर है ॥ रस्तेमें गांवोंमें मंदिर हैं सो दर्शन
करे ॥ मोडबद्रीमें ठहरनेका ठिकाना ॥ जैनीके मठ-
में ॥ पद्मराजसेठीके मकानमें ॥ कुंजमसेठीके मकान-
में है ॥ इस नगरमें मंदिर अठारे हैं ॥ इनके सामि-
ल चार मंदिर न्यारे और छोटे हैं ॥ ऐसे बाइस हैं ॥
चैत्यालय एक कुंजमसेठीके मकानमें है ॥ इहां सर्व
प्रतिमा अंदाज पाँच हजार ऊपर हैं ॥ इन बाईस

मंदिरमें दो मंदिर बडे हैं ॥ एक चंद्रप्रभु स्वामीका ॥ दूसरा पार्श्वनाथ स्वामीका इन दोनों मंदिरोंमें प्रतिमा जादा हैं ॥ चंद्रप्रभु स्वामीकी प्रतिमा पीतलकी कायोत्सर्ग ऊंची अंदाज साडेचार हाथ है ॥ इहां पार्श्वनाथ स्वामीके मंदिरमें और प्रतिमा रत्नोंकी सताइस न्यारी हैं उनके दर्शन पंचोंके हुकमसे कराते हैं ॥ और धवल महा धवल जय धवल विजय धवल आदि सिद्धांत शास्त्र प्राकृत संस्कृत ताडके पत्र ऊपर लिखे चारों अनुयोगके हजारों हैं ॥ जैनी ब्राह्मणोंके तीस घर हैं ॥ पंचम श्रावकोंके पच्चीस घर हैं ॥ ३३ ॥ मोडबद्रीसे कारकल नगर दश मील है ॥ ठहरनेका ठिकाना जैनके मठमें है ॥ इस नगरमें मंदिर अठारे हैं ॥ इहां एक पर्वत छोटा है इसके ऊपर पत्थरका कोट बना है इसके भीतर पत्थरकी बडी बेदी बनी है ॥ इसके ऊपर श्रीबाहुबली स्वामीका प्रतिबिंब कायोत्सर्ग बडा बिराजमान है ॥ इनके पांवका पंजा लंबा सवातीन हाथ है ॥ इनकी प्रतिष्ठा संवत तेरासौ त्रेपनके शाल हुई है ॥ इस देशके मंदिर आदिका जादा वर्णन खुलाशा विस्तारसे दूसरी बडी पुस्तक और है उनमें लिखा है ॥ कारकलसे दूसरा रस्ता जानेका और है हुंमसकटासे हुमसपद्मावती होके ॥

हुबली धारवाडसे जावे इहांसे कोल्हापुर इहांसे सता-रेकी रेल होके पुना होके बंबई जावे इस मुजब भी रस्ता है जिधरकी तरफसे सुगम रस्ता होवे उधरकी तरफसे तलास करके जावे ॥ और जो नहीं रस्ता मालुम होवे तो आये रस्ते कारकलमोडबद्री होके जावे तिनका जानेका रस्ता लिखते हैं ॥ ३४ ॥ कारकलसे मोडबद्री आवे ॥ इहांसे पंदरा दिनका खानेका सामान आटा दाल घृत आदि लेवे ॥ फेर आये रस्ते पीछे लौटके बिंगलोर सेहर आवे ॥ ३५ ॥ बिंगलोरसे टिकट श्यामको आरकोनका लेवे सवेरे उतरे ॥ ३६ ॥ आरकोनसे टिकट रायचूरका लेवे छपेहरमें उतरे ॥ ३७ ॥ रायचूरसे टिकट दिनके साडेग्याराबजे बंबईका लेवे सो दूसरेरोज दिनके ग्याराबजे उतरे ॥ रेलसे पींजरा पोल तथा भुलेश्वर एक मील ऊपर है ॥ वहां ठहरनेकी जगे आरामकी सहरके बीच है ॥ इहांसे दिगंबर मंदिर नजीक है ॥ इस बंबईमें एक मंदिर है ॥ एक चैत्याला है ॥ मंदिर बहुत छोटा है ॥ इसमें पचास आदमी बैठे उतनी जगे है ॥ बडा मंडल मांडके उतछव करनेकी जगे नहीं है ॥ इस मंदिरमें जितनी प्रवृत्ति हैं सो सब स्वेतंबर मतवालोंसरीखी

है जैसे उनके मनमे वीचार होता है उस मुजिब कर-
ते हैं ॥ इहां शुद्ध दिगंबर आम्नायवालोंको धर्म सेवन
करनेकी बडी तकलीफ थी इस वास्ते भाडेका मकान
लेके प्रतिमाजी विराजमानकी है पचास साठ आदमी
बैठे उतनी जगे है ॥ इहां हजारों आदमी शुद्ध दिगं-
बरी आते हैं उनको बेठके धर्म सेवन करनेको बडा
मंदिर नहीं है जिसवास्ते सर्व देशके जैनीभाईयोंके त-
रफसे शुद्ध दिगंबर आम्नायका बडा मंदिर बनेगा
इहां दिगांबर श्रावक धनवान नहीं है इसवास्ते इस-
के बनानेका सर्व देशके जैनी भाई रूपैये देनेकी मदत
जरूर करें ॥ और इस बंबइमें दिगंबरी इतनी जातके
श्रावकोंके घर हैं उनके नाम लिखते हैं ॥ खंडेलवाल
श्रावकोंके घर हैं ॥ अगरवाले श्रावकोंके घर ॥ हुंबड
श्रावकोंके घर ॥ नरसींगपुरा श्रावकोंके घर ॥ पल्लीवा-
ल श्रावकोंके घर ॥ जेसवाल श्रावकोंके घर ॥ सेतवाल
श्रावकोंके घर ॥ पंचम श्रावकोंके घर इन आदिके जा-
तके श्रावकोंके घर हैं ॥ बंबई सहर बहुत बडा है उ-
जल वस्ती है देखनेलायक है ॥ ३८ ॥ बंबईसे
टिकट बडोदेका लेवे चार पहरमें पोंहचे ॥ रेलके सा-
मने बडी बडी धर्मशाला हैं उनमें ठहरे ॥ इहांसे दो
मील पाणीदरवाजेके नजीक नवी पोलमें दिगंबर मं-

दिर है ॥ दूसरा मंदिर बाडीके बजारमें है ॥ मेंवाडा श्रावकोंके बीस घर हैं ॥ हुंबड श्रावकोंके तीन घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके छ घर हैं ॥ अगरवाले श्रावकोंके दो घर हैं ॥ जेसवाल श्रावकोंका एक घर है ॥ इहांसे छ दिनका खानेका सामान लेवे ॥ पूजनकी सामग्री लेवे ॥ गाडीभाडे करें ॥ ३९ ॥ बडोदासे तीस मील पावागढ सीद्ध क्षेत्र है ॥ इहां धर्मशाला आदिमें ठहरे ॥ इहां दिगंबर मंदिर एक है ॥ इहांसे स्नान करके ॥ पूजनकी सामग्री लेके चले ॥ छ मील पावागढ पर्वत ऊपर जावे इहांसे लव अंकुश लाडदेशका राजा आदि पाँच करोडमुनि मुक्ति गये हैं ॥ इहां पर्वत ऊपर मंदिर एक पार्श्वनाथ स्वामीका है ॥ पावागढसे बडोदे आवे ॥ ४० ॥ बडोदेसे टिकट बडवानका लेवे ॥ इहां धर्मशालामें ठहरे ॥ ४१ ॥ बडवानसे टिकट सोनगढका लेवे ॥ इहांसे गाडीभाडे करके चौदा मील पालीटाने जावे ॥ धर्मशालामें ठहरे ॥ इहांसे छ मील सत्रुंजय पर्वत ऊपर जावे इहांसे युधिष्टिर भीम अर्जुन ॥ द्रविडदेशका राजा आदि आठ करोडमुनि मुक्ति भये हैं ॥ इस पर्वत ऊपर दिगंबर मंदिर एक है ॥ नीचे पालीटानेमें मंदिर एक है ॥ इहांसे सोनगढ आवे ॥ ४२ ॥ सोनगढसे टिकट

जूनागढका लेवे ॥ बीचमें रेल जयतपुरमें बदलती है ॥ जूनागढके रेलके इष्टेसनसे एकमील दिगंबर स्वेतंबरकी धर्मशाला है इनमें ठहरे ॥ मंदिर एक दिगंबरका है ॥ जूनागढसे दिनके तीनबजे पीछे ॥ पूजनकी सामग्री लेवे खानेका सामान धोती दुपट्टे बिछानेकेवास्ते इन आदि जो वस्तु चाहिए सो लेवे ॥ जूनागढसे तीन मील दिगंबर स्वेतंबरकी धर्मशाला है उनमें ठहरे इहांसे सवेरे स्नान करके पूजनकी सामग्री लेके चले सो गिरनारके पर्वत ऊपर दिगंबरके दो मंदिर हैं वहां पूजा करे ॥ फिर केवल कल्याणके स्थानमें मोक्षके स्थानमें दीक्षाके स्थानमें इन आदि सर्व स्थानमें पूजा करे इस गिरनार पर्वत ऊपरसे नेमनाथ स्वामी ॥ प्रद्युम्न कुमार ॥ संभुकुमार अनिरुधकुमार आदि बहत्तर करोडमुनि मोक्ष गये हैं ॥ इस पर्वतसे उतरके नीचे धर्मशालामें आवे इहां खानेका सामान रखा है सो खाके जूनागढ आवे ॥ ४३ ॥ जूनागढसे टिकट अमदाबादका लेवे बीचमें दो ठिकाने रेल बदलती है ॥ जयतपुरमें ॥ बढवानमें इस रेलसे उतरके अमदाबाद जानेवाली रेलमें बैठे ॥ अमदाबादमें रेलके सामने बावडीके पास बडी धर्मशाला है वहां ठरे ॥ मंदिर तीन

हैं ॥ चैत्यालय दो हैं ॥ हुंबडश्रावकोंके तीन घर हैं ॥ मेवाडा श्रावकोंके दो घर हैं ॥ नरसिंगपुरा श्रावकोंके बारा घर हैं ॥ खंडेलवाल श्रावकोंके दो घर हैं ॥ ये सहर बहुत बडा है ॥ ४५ ॥ अमदावादसे टिकट पालनपुरका लेवे ॥ रेलसे नजीक धर्मशाला है वहां ठहरे ॥ इस नगरमें स्वेतंबरका पंचाईती मंदिर बडा है उनमें दिगंबर दो प्रतिमा पीतलकी पद्मासन ऊंची एक बिलसतकी है सो पूजारीको दो आनेके पैसे देके प्रक्षाल करके दर्शन करे ॥ इहांसे गाडीभाडे करे छ दिनका खानेका सामान पूजनकी सामग्री लेवे ॥ ४६ ॥ पालनपुरसे अठ्ठाइस मील तारंगा सिद्ध क्षेत्र है रस्तेमें रेता बहुतसा आता है जिस्से दो दिन लगते हैं ॥ और रस्तेमें छोटा गांव आता है वहां स्वेतंबरके मकानमें एक प्रतिमा पीतलकी पद्मासन ऊंची पाँच उंगलकी दिगंबर है सो प्रक्षाल करके दर्शन करे ॥ इस तारंगा सिद्ध क्षेत्रमें दो पर्वत है इसके ऊपरसे वरदत्त वरांग सागर आदि साडेतीन करोडमुनि मुक्त भये हैं ॥ इस पर्वतके नीचे मैदानमें मंदिर पाँच हैं ॥ इहांसे पालनपुर आवे ॥ ४७ ॥ और आबूके पर्वत ऊपर दिगंबर मंदिर हैं सो किसी जैनीभाईयोंको यात्रा दर्शन करना होयतो रस्तेमे है पालनपुरसे टिकट खे-

राडीका लेवे तीस मील है ॥ रेलके नजीक धर्मशाला है वहां ठहरे इहांसे घोडा भाडे करे चार दिनका खानेका सामान लेवे पूजनकी सामग्री लेवे ॥ खेराडीसे चौदा मील आबूके पर्वत ऊपर देलवाडाकेपास जावे वहां दिगंबरके स्वेतंबरके मंदिरकेपास धर्मशाला है वहां ठहरे इहां दिगंबर मंदिर दो हैं ॥ स्वेतंबर मंदिर चार हैं ॥ इनमें एक मंदिरके दरवाजे ऊपर दिगंबरप्रतिमाहै सो स्वेतंबरप्रतिमाके शामिल हैं ॥ और पाँच प्रतिमा दिगंबर न्यारी हैं दूर ऊपरकी बाजूमें छोटी छतरीमें बिराजमान हैं ॥ और इहां स्वेतंबरके मंदिर सुपेद पत्थरके बने हैं उसके ऊपर कोरनीका काम बहुत उम्दा कीया है देखने लायक है ऐसा काम कोरनीका किसी देशमें नहीं है ये पहाड सौ मीलके गिरदावसे जादा है ॥ इहां हाजारों बंगले अंगरेजोंके हैं पचास मीलके फैलावके भीतर बने हैं बहुतसे व्यापरीयोंकी दुकाने हैं बजार लगे हैं देखने लायक रमनीक स्थान है ॥ इहांसे छ मील ऊपर अचलगढ है वहां स्वेतंबरके मंदिर बडे बडे हैं इनमें पीतलकी प्रतिमा पद्मासन कायोत्सर्ग बडी बडी चौदा स्वेतंबरकी हैं चार पाँच ठिकाने न्यारी न्यारी रक्खी हैं पीतल बहुत अछा है ये भी स्थान देखनेलायक है ॥

इस पर्वतसे उत्तरके नीचे खेराडी आवे ॥ ४८ ॥ खेराडीसे टिकट अजमेरका तथा जयपुरका लेवे ॥ ४९ ॥ जयपुरसे टिकट दिल्लीका तथा आगरे आदि अपने अपने नगरके प्रति जानेका लेवे ॥ ५० ॥ जो ये ऊपर लिखी दोनों भागकी यात्रा हैं इन सिवाय जो बाकी रही यात्रा ॥ सिद्ध क्षेत्रोंकी तथा भगवानके जन्मनगरियोंके ठिकाने मालुम नहीं है सो किसी जैनी भाइयोंको मालुम होय तो सर्व देशमें इनके ठिकाने जरूर लिख भेजे ॥ यात्राके नाम लिखते है ॥ पावागिरिके शिखर निकट सुवर्ण भद्रादिक चार मुनि मुक्त भये हैं ॥ १ ॥ चेलना नदीके अग्रभाग विषय मुनि मुक्त भये हैं ॥ २ ॥ कलिंग देशमें कोट शिला है जहांपर राजा दशरथके पाँचसौ पुत्रोंको आदि लेके कोटि मुनि मुक्त भये हैं ॥ ३ ॥ रेवानदीके दोनों तटके विषय रावण राजाके बेटोंको आदि लेकर साडेपाँच हजार मुनि मुक्त भये हैं ॥ ४ ॥ और द्रोणीमती विषय ॥ ५ ॥ प्रवर कुंडल विषय ॥ ६ ॥ प्रवरमें ढक विषय ॥ ७ ॥ वैभार पर्वतके तल विषय ॥ ८ ॥ वर सिद्धकूट विषय ॥ ९ ॥ श्रवणगिरि विषय ॥ १० ॥ विपुलाद्रि विषय ॥ ११ ॥ बलाह विषय ॥ १२ ॥ विंध्याचल विषय ॥ १३ ॥

पोदनापुर विषय ॥ १४ ॥ वृषदीपक विषय ॥ १५ ॥ सह्याचल विषय ॥ १६ ॥ हिमवत पर्वत विषय ॥ १७ ॥ सुप्रतिष्ठ विषय ॥ १८ ॥ दंडात्मक विषय ॥ १९ ॥ प्रथुसारयष्टि विषय ॥ २० ॥ नदीके तटविषय जितरिपु सुवर्णभद्र आदि मुनि मुक्त भये हैं ॥ २१ ॥ रेवानदीके दोनों तट विषय वहुतसे मुनि मुक्त भये हैं ॥ २२ ॥ गुरुदत्त वरदत्त आदि पांच मुनि रिस्सिदेह पर्वतके शिखर विषय मुक्त भये हैं ॥ २३ ॥ इतने ठिकाने मुक्त गये हैं परंतु इनके स्थान मालुम नही हैं ॥ और कैलास पर्वत ऊपरसे ऋषभदेव नागकुमार मुनिभद्र ॥ वाल महावाल छेद अभेद्य आदि मोक्ष भये हैं ॥ २४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जिन भगवानकी जन्मनगरियोंके ठिकाने मालुम नहीं हैं तिनके नाम लिखते हैं ॥ नौवें तीर्थंकरकी नगरी काकिंदीपुरी है ॥ दशवें तीर्थंकरकी नगरी मालव देशमें भद्रपुरी ॥ १ ॥ पंदरवें तीर्थंकरकी नगरी रत्नपुरी ॥ २ ॥ उंनीसवें तीर्थंकरकी नगरी बंगदेशमें मिथिलापुरी ॥ ३ ॥ वीसवें तीर्थंकरकी नगरी राजग्रहपुरी ॥ ४ ॥ इक्कीसवे तीर्थंकरकी नगरी बंगदेशमें मिथिलापुरी ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जो ये दूसरे भागकी यात्रा दिल्ली आगरेसे लगाके

बंबई हाथेकी तथा मदराज हाथेकी सर्व यात्रा करे तो चार महीने लगते हैं ॥ एक आदमीके खरचके ॥ भोजनके तथा रेल गाडीके भाडेके बैलगाडीके घोडा गाडीके भाडे आदिके सौ रुपये लगते हैं और पूजनकी सामग्री तथा मंदिरके भंडारके वा दुखित भुखित आदि धर्मकार्यके रुपये न्यारे लगते हैं ॥ ॥ ये यात्राकी छोटी पुस्तक सवाई जयपुरवाला दुलीचंद पाक्षिक श्रावकने पंजाब देशमें अंबालेकी छावनीमें बनाई है इहांके मुसद्दी लाल अगरवाले श्रावक सरधानीके कहनेसे ये ॥ पुस्तक जैनधर्मियोंकी यात्राकी है ॥ सवंत १९४४ मार्गशीर्ष शुदी २ गुरुवारके रोज तयारकी है ॥ ॥ और बंबैमें शुद्ध दिगंबर आम्नायका मंदिर पायधूनीपर जती अन्नयचंदजीके मकानमे तीसरे मालेऊपर है ठिकाना तामलेटकी बडी सडकके चौ रस्तेके पास कालकादेवीके मंदिरके सामनें दोनों स्वेताम्बरी मंदिरोंके बीचमे तीसरा दिगंबरी मंदिर है ॥ ॥ ये सर्व यात्राकी पुस्तक दिगंबर आम्नायके श्रावकोंके सर्वके घरमें एक एक जरूर रहना चाहिये रोज इस पुस्तकका जो कोई पाठ करके सर्व यात्राका ध्यान करे तो बहुतसे पापका नाश होवेगा ॥ ॥

ये यात्राकी पुस्तक मारवांडी बाजारमें गुरुमुखराय सुखानन्द दिगंबर श्रावककी दुकानपर मिलती है जिस किसी श्रावकको चाहिये तौ चिट्ठी द्वारा अपना पत्ता देके मंगा लेवै ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

समाप्त.

इस पुस्तकसे दूसरी बडी पुस्तक
औरभी है, उसमें बहुत वि-
स्तारसे यात्राका खुलासा
वर्णन किया है.

ये यात्राकी पुस्तक दिगम्बरमतकी बु-लीचंद पाक्षिक श्रावकनें बनाई है, सो दिगंबर मतवाले यात्रियोंको इसके देखनेसे यात्रा सुगम होवे. और कोई तीर्थ छूटने न पावे. संपूर्ण यात्रा सुखसे होवे. संवत् १९४५ फागुण कृष्णा द्वितीया रविवार.